### Chapter D Occupancy and Distribution (Fosna-anugam)

What is Here, and what is there? *Fosna* (in touch, in contact) is the relationship of entities of a category (not individuals) with surrounding characterized as accessibility, occupancy and distribution. Occupancy may be the actual physical occupied space or the worlds, and distribution in the universe is in the 14 worlds. The human accessible world is idle of the universe, between the upper and the under worlds. Some *Niray* are in "touch" with human accessible world but most occupy the six underworlds that are not accessible to humans. Some *dev* are also in "touch" with human worlds and under worlds but most *dev* are confined to the seven human-inaccessible celestial and imagined worlds.

For the concept development, occupancy and distribution build on worlds represented within boundless space, and that no represented entity occupies the entire universe. Occupancy is expressed as fraction of a world or in worlds as a fraction of the universe. Thus beings of a particular category may occupy a fraction of the world are distributed in a fraction of the universe of the 14 worlds. फोसणाणुगमेण दुविहे। णिद्देसी, ओघेण आदेसेण य ॥ १॥

स्पर्श्वनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश-निर्देश ॥ १ ॥

**#D1**. Consideration (*anugam*) of area of distribution (*fosna*) is operationally applied to the universals related to the particulars of the observables.

\*\*\*\*

#### In relation to the State (D2-10)

ओघेण मिच्छादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, सव्वलोगो ॥ २ ॥

ओघसे मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वलोक स्पर्श किया है ।। २ ।।

**#D2**. As a generalization, those in State I are distributed on how much surface? They are in all the worlds.

\*

सासणसम्मादिईाहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ।। ३ ॥

### अट्ठ वारह चोदसभागा वा देसुणा ॥ ४ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श किया है ॥ ३ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह माग तथा कुछ कम बारह बटे चौदह भाग प्रमाण क्षेत्र स्पर्श किया है ॥ ४ ॥

**#D3**. Those in State II are distributed on (or in touch with) how much surface? On a small fraction of their worlds,

**#D4**. And in 8 to 12 of the 14 worlds.

**Note**: This is at variance from the Hindi translation that refers to distribution on 8 to 12 worlds in all the past states. Neither of these two interpretations hold for all mentions in this chapter.

सम्मामिच्छाइट्टि·असंजदसम्माइट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेजदिभागो ॥ ५ ॥

#### अट्ट चोइसभागा वा देसूणा ॥ ६ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ६ ॥

**#D5**. Those in State III or IV are distributed on how much surface? On a small fraction of their worlds,**#D6**. and in 8 of the 14 worlds.

\*

# संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंस्वेजदि-भागो ॥ ७॥

छ चोइसभागा वा देसूणा ॥ ८ ॥

संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श्व किया है ॥ ७ ॥

संयतासंयत जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ८ ॥

**#D7**. Those in State V are distributed on how much

surface? On a small fraction of their worlds,

**#D8**. and in 6 of the 14 worlds.

(It implies that five-sensed Sanni tirikkh are present in other worlds.)

\*

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९ ॥

#### प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥९॥

**#D9**. (Human) Beings in States VI through XIV are distributed on how much surface? Only a very small fraction of their world.

# सजोगिकेवळीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो, असंखेज्जा वा भागा, सव्वलोगो वा ॥ १० ॥

सयोगिकेवली भगवन्तोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १० ॥

**#D10**. *Sajogkevali* are distributed on how much surface? Only a small part of a small fraction of their world, and all worlds (through their concerns?).

\*\*\*\*

#### In relation to the niray (D11-22)

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११ ॥ छ चोद्दसभागा वा देसुणा ॥ १२ ॥

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ११ ॥

नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं।। १२।।

**#D11**. Operationally, *niray* in State I are distributed on how much surface? They occupy a small fraction of their world,

**#D12**. and 6 of the 14 worlds.

\*

सासणसम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ १३ ॥

#### पंच चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १४ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि नारकियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्या-तबां भाग स्पर्श किया है ॥ १३ ॥

उन्हीं सासादनसम्यग्दप्टि नाराकियोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम पांच बटे बौदह माग स्पर्श किये हैं ॥ १४ ॥

**#D13**. *Niray* in State II are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,**#D14**. And in 5 of the 14 worlds.

## सम्मामिच्छादिद्वि·असंजदसम्मादिट्वीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १५ ॥

**#D15**. *Niray* in States III or IV are distributed on how much surface? Only a small fraction of their worlds.

## पढमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्टिपहुडि जाव असंजदसम्मा-दिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेजदिभागो ॥ १६ ॥

प्रथम प्रथिवीमें नारकियोंमें मिथ्याइष्टि गुणस्थानते लेकर असंयतसम्यग्डष्टि नारकी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है 3 लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १६ ॥

**#D16**. *Niray* of the first underworld in States I through IV are distributed on how much surface? Only a small fraction of their worlds.

विदियादि जाव छट्टीए पुढवीए णेरइएसु मिच्छादिट्टि-सासण-सम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिशागो ॥१७॥

एग वे तिण्णि चत्तारि पंच चोदसभागा वा देसूणा ॥ १८ ॥

सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिईाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, होगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९ ॥

द्वितीय प्रथिवीसे लेकर छठी प्रथिवी तक प्रत्येक प्रथिवीके नारकियोंमें मिथ्या-दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १७॥

उक्त जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा चौदह भागोमेंसे कुछ कम एक, दो, तीन, बार और पांच भाग स्पर्श किये हैं ।। १८ ।।

द्वितीय पृथिवति लेकर छठी पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असंख्या-वां भाग स्पर्श किया है ॥ १९ ॥

**#D17**. *Niray* of the second to the sixth underworld in States I or II are distributed on how much surface? On a small fraction of their worlds,

**#D18**. And in 1, 2, 3, 4 or 5 worlds out of the 14.

\*

**#D19**. *Niray* of the second to the sixth underworld in the State III or IV are distributed on how much surface? Only a small fraction of their worlds.

सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पेसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागों ॥ २० ॥

### छ चोइसभागा वा देसूणा ॥ २१ ॥

सासणसम्मादिट्टि-सम्मामिच्छादिट्टि-असंजदसम्मादिर्ट्टाहि केवडियं बेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २२ ॥ सातवीं प्रथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? होकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २० ॥

सातवीं प्रथिवीके मिथयाद्दष्टि नारकियोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ २१ ॥

सातनीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २२ ॥

**#D20**. *Niray* of the seventh underworld in State I are distributed on how much surface? On a small fraction of their worlds,

**#D21**. and on 6 of the 14 worlds.

**#D22**. *Niray* in States II, III or IV are distributed on 6 of the 14 worlds.

\*\*\*\*\*

In relation to the tirikkh (D23-33)

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, ओघं ॥ २३ ॥

तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ओघके समान सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ २३ ॥

**#D23**. Operationally, *tirikkh* in State I are distributed on how much surface? All worlds according to the generalization for state I.

सासणसम्मादिईाहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेजदि-भागो ॥ २४ ॥

### सत्त चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असं-ख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। २४ ।।

#### सासादनसम्यग्दष्टि तिर्यंचोंने भूत और भविष्यकालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ २५ ॥

**#D24**. *Tirikkh* in State II are distributed on how much surface? On a small fraction of their worlds,**#D25**. and in 7 of the 14 worlds.

\*

## सम्मामिच्छादिईाहि केवडियं खेतं फोसिदं, लोगस्स असंखे· ज्जदिभागो ॥ २६ ॥

सम्यग्मिथ्याद्दष्टि तिर्यंचोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २६ ॥

**#D26**. *Tirikkh* in State III are distributed on how much surface? Only a small fraction of their worlds.

असंजदसम्मादिट्टि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २७ ॥

## छ चोइसभागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

असंयतसम्यग्दष्टि और संयतासंयत गुणस्थानवर्ती तिर्यंचोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २७॥

उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती तिर्यंच जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं। २८ ॥

**#D27**. *Tirikkh* in States IV or V are distributed on how much surface? On a small fraction of their worlds,**#D28**. and in 6 of the 14 worlds.

\*

# पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त जोणिणीसु मिच्छादि-ईहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेजविभागो ॥ २९ ॥

सञ्बलेगो वा ॥ ३० ॥

पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियातिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंच योनिमतियोंमें मिध्याइष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २९ ॥

उक्त तीनों प्रकारके तियेंच जीवोंने अतीत और अनागत कालमें सर्वलोक स्पर्श किया दे ॥ ३० ॥

**#D29**. Five-sensed independent sexually differentiated *tirikkh* in state I are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D30**. and in all the 14 worlds (?).

# सेसाणं तिरिक्खगदीणं भंगो ॥ ३१ ॥

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३२ ॥

सञ्वलेगो वा ॥ ३३ ॥

श्रेष तिर्यंचगतिके जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ३१ ॥

पंचेन्द्रियातिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवोंने कितनाक्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असं-ख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ३२ ॥

पंचेन्द्रियतिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ३३ ॥

**#D31**. Distribution of other *tirikkh* follows from the generalization for the category.

**#D32**. Dependent five-sensed *tirikkh* are distributed on how much surface? On a small fraction of their worlds,

**#D33**. And in all the 14 worlds.

\*\*\*\*

In relation to humans (D34-41)

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छादिईीहि केव· डियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३४ ॥

#### सब्वलोगो वा ॥ ३५ ॥

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ३४ ॥

मिथ्यार्दाष्ट मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंने अतीत और अनागत-कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ।। ३५ ॥

**#D34**. Independent men and women in State I are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D35**. And in all 14 worlds (?).

सासणसम्मादिईाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ ३६ ॥

# सत्त चोइसभागा वा देसूणा ॥ ३७ ॥

मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ३६ ॥

मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं।। ३७॥

**#D36**. Independent men and women in State II are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D37**. And in fewer than 7 worlds.

\*

सम्मामिच्छाइहिपहुडि जाव अजोगिकेवर्रीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३८ ॥

सजोगिकेवळीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेजदिभागो, असंखेज्जा वा भागा, सव्वलेगो वा ॥ ३९ ॥

मणुसअपज्जत्तेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ ४० ॥

सन्वलोगो वा ॥ ४१ ॥

मनुष्योंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थ न तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है।। ३८ ।।

सयोगिकेवली जिनोंने कितना क्षेत्र स्पर्श-किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ३९ ॥

ल्रब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ४० ॥

ल्डच्ध्यपर्याप्त मनुष्योंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ४१ ॥

**#D38**. Humans in States III through XIV are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

**#D39**. *Sajogkevali* are distributed on a small fraction of their world with their concerns for all the worlds.

**#D40**. Dependent human are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D41**. And in all worlds (?).

\*\*\*\*

In relation to the dev (#42-56)

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जादिभागो ॥ ४२ ॥ अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देस्रणा ॥ ४३ ॥

सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मादिईाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, होगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४४ ॥

अड चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४५ ॥

देवगतिमें देवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्द्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्वर्श्व किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्वर्श किया है ॥ ४२ ॥

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा इन्न कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं॥ ४३॥

**#D42**. *Dev* in States I or II are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D43**. And in 8 or 9 of the 14 worlds.

**#D44**. *Dev* in States III or IV are distributed on how

\*

much surface? On a small fraction of their worlds,

**#D45**. And in 8 of the 14 worlds.

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु मिच्छादिट्टि-सासणसम्मा-दिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४६ ॥ अद्भुट्टा वा, अट्ट णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४७ ॥

सम्मामिच्छादिट्टि-असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

अदुट्टा वा अट्ट चोद्दसभागा वा देस्णा ॥ ४९ ॥

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्य-ग्दुष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ४६ ॥ मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंने अतीत और अनागत बालकी अपेक्षा लोकनालीके चौदह मागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, आठ भाग और नौ भाग स्पर्श किये हैं।। ४७॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श किया है ॥ ४८ ॥

सम्यग्रिमथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम सादे तीन भाग और कुछ कम आठ बटे चौद्द भाग स्पर्श्व किये हैं ॥ ४९ ॥

**#D46**. Sub-class of *dev* that dwell in homes in State I or

II is distributed on how much surface? On a small

fraction of their world,

**#D47**. and in 3.5 (for those in State I) and 8 or 9 (for those in State II) of the 14 worlds.

**#D48**. These *dev* in State III or IV are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D49**. and in 3.5 (for those in State IV) and 8 (for those in State III) of the 14 worlds.

सोधम्मीसाणकपवासियदेवेसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव असंजद-सम्मादिट्ठि त्ति देवोघं ॥ ५० ॥

सणक्कुमारपहुडि जाव सदार-सहस्सारकपवासियदेवेसु मिच्छा-दिर्हिपहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५१ ॥

#### अट्ट चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ५२ ॥

सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानते लेकर असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवोंका स्पर्शनक्षेत्र देवोंके ओघस्पर्शनके समान है॥ ५०॥ सनत्कुमारकल्पसे लेकर शतार सद्दसारकल्प तकके देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है १ लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श किया है ॥ ५१॥

सनत्कुमारक.ल्पसे लेकर सहस्रारक.ल्प तकके मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुण-रधानवतीं देवोंने अतीत और अनागत कालमें कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श्व किये हैं ॥ ५२ ॥

**#D50**. As a generalization for the State, class of imagined celestial *dev* in State I through IV are distributed on 8 of the 14 worlds.

**#D51**. Saudhamm (Saudharm) and sahastrar class of imagined dev in State I through IV are distributed on how much surface? On a small fraction of their world, **#D52**. And in 8 of the 14 worlds.

आणद जाव आरणच्चुदकपवासियदेवेसु मिच्छाइडिपहुडि जाव असंजदसम्मादिर्ट्टाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ ५३ ॥

#### छ चोइसभागा वा देखुणा पोसिदा ॥ ५४ ॥

आनतकल्पसे लेकर आरण-अच्युत तक कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५३ ॥

#### चारों गुणस्थानवर्ती आनतादि चार करपवासी देवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं।। ५४।।

**#D53**. The classes of the infinitely large or small imagined dev in States I through IV are distributed on how much surface? On a small fraction of their world, **#D54**. And in 6 of the 14 worlds.

\*

णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिहिप्पहुडि जाव असंजद-सम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंक्षेज्जदिभागो ॥५५॥

अणुदिस जाव सब्बट्टसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मा-दिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५६ ॥

नवग्रैवेयक विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक विमानके गुणस्थानवर्ती देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ५५ ।।

नव अनुदिश विमानोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक विमानवासी देवोंमें असंयतसम्य-रुद्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५६ ॥

**#D55**. Navgavak (navgrah, nine planets?) and other celestial moving dev are distributed on how much surface? On a small fraction of their world. **#D56**. Dev of the nine directions up to savvathsiddhi (Sarvarthsiddhi - the farthest reaches of the universe for "all intents and purposes") are distributed on how much

surface? On a small fraction of their world.

\*\*\*\*\*

#### In relation to the senses (D57-65)

इंदियाणुवादेण एइंदिय-वादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, सब्वल्रोगो ॥ ५७ ॥

बीइंदिय·तीइंदिय-चउरिंदिय·तस्सेब पज्जत्त-अपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५८ ॥

सब्बलोगो वा ॥ ५९ ॥

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छादिईाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्त असंखेज्जदिभागो ॥ ६०॥ अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सञ्वलोगो वा ॥ ६१ ॥

इन्द्रियमागणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रियपर्याप्त, एकेन्द्रियअपर्याप्त; बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रियपर्याप्त, बादर एकेन्द्रियअपर्याप्त; सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रियपर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वळोक स्पर्श किया है ॥ ५७ ॥

द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रियपर्याप्त, द्वीन्द्रियअपर्याप्त; त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रियपर्याप्त, श्रीन्द्रियअपर्याप्त; चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रियपर्याप्त और चतुरिन्द्रियअपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५८ ॥

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ ५९ ॥

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ६० ॥

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ।। ६१ ॥

**#D57**. Operationally, the various classes (dependent and independent, macro- and micro-forms) of the one-sensed beings are distributed on how much surface. On all the (14) worlds.

**#D58**. Two- to five-sensed dependent and independent beings are distributed on how much surface? On a small fraction of the surface of their world,

**#D59**. And they are in all the worlds.

**#D60**. The five-sensed independent beings in State I are distributed on how much surface? On a small fraction of the surface of their world,

**#D 61**. And in 8 of the 14 worlds.

सासणसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघं ॥६२॥

#### सजोगिकेवली ओघं ॥ ६३ ॥

## पंचिंदियअपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असं-खेजदिभागो ॥ ६४ ॥

#### सव्वलोगो वा ॥ ६५ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है।। ६२।।

सयोगिकेवली जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ६३ ॥

ल्डम्प्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असं-रूयातवां माग स्पर्श किया है ॥ ६४ ॥

लड्ध्यपर्याप्त पंचोन्द्रिय जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श्व किया है ॥ ६५ ॥

**#D62**. Surface for distribution of humans in States II through XIV follows from the generalization for the State.

**#D63**. The same generalization holds for *sajogkevali*.

**#D64**. Five-sensed dependents are distributed on how

much surface? On a small fraction of their world,

**#D65**. And they are in all the worlds.

\*\*\*\*

#### In relation to the body form (D66-73)

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय वाउकाइय-बादरपुढविकाइय-- बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणफ्फदिकाइयपत्तेयसरीर-तस्सेवअपज्जत्त-सुहुमपुढविकाइय-सुहुम-आउकाइय-सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइय-तस्सेवपज्जत्त--अपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, सब्बलोगो ॥ ६६ ॥ बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवणप्फदि· काइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखे· ज्जदिभागो ॥ ६७ ॥

### सञ्बलेगो वा ॥ ६८ ॥

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक जीव तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर बायु-कायिक और बादर वनस्पतिकायिकप्रत्येकश्वर्रार जीव तथा इन्हीं पांचोंके बादर काय-सम्बन्धी अपर्याप्त जीव; सक्ष्म पृथिवीकायिक, सक्ष्म जलकायिक, सक्ष्म अग्निकायिक, सक्ष्म वायुकाायिक और इन्हीं सक्ष्म जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ६६ ॥

बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक और बादर बनस्पतिकायिकप्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ६७ ।।

उक्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है।।६८॥

**#D66**. Operationally, the various sub-classes of the onesensed micro-forms are distributed on how much surface? On surfaces of all the worlds.

**#D67**. The one sensed macro-forms are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,**#D68**. And in all the worlds.

# बादरवाउपजत्तएहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स संखेज्जदि-भागो ॥ ६९ ॥

सन्वलोगो वा ॥ ७० ॥

बादरवायुकायिक पर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका संख्यातवां माग स्पर्श किया है ।। ६९ ॥ बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ।। ७० ।।

**#D69**. The air macro-form independent beings are distributed on how much surface? On a countable (significant) part of their world,**#D70**. And in all the worlds.

\*

वणप्फदिकाइयणिगोदजीवबादरसुहुम-पजत्त-अपज्जत्तएहि केव• डियं खेत्तं पोसिदं, सब्वलोगो ॥ ७१ ॥

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पति-कायिक सक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त जीव, निगोद सक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सक्ष्म अपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ७१ ॥

**#D71**. The (various) plant forms are distributed on how much surface? On all the surface of their worlds.

तसकाइय·तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव अजोगि· केवलि त्ति ओघं ॥ ७२ ॥

#### तसकाइयअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ॥ ७३ ॥

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ७२ ॥

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र पंचेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्त जीवोंके समान लोकका असंख्यातवां भाग है ।। ७३ ।। **#D72**. The surface distribution of the crawler forms in States I through XIV follows from the generalization for the State.

**#D73**. They are on a small fraction of their world.

\*\*\*\*

In relation to the ability to communicate (D74-101)

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि पंचवचिजोगीसु मिच्छादिईाहि केव-डियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७४ ॥ अड चोद्दसभागा देखूणा, सञ्वलोगो वा ॥ ७५ ॥ सासणसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं ॥ ७६ ॥ पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७७ ॥

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥७४॥

पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ७५ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ७६ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवती उक्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लेकिका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है॥ ७७॥

**#D74**. Operationally, those in State I and communicate through five modes of expression (*man*) and the five modes of utterance are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D75**. And they are on 8 of the 14 worlds, and also all the worlds (according to the generalization for State I).

**#D76**. Surface occupied by such beings (D74) in StatesII through V follows from the generalization for the State.**#D77**. Such beings in States VI through XIV aredistributed on how much surface? On a small fraction oftheir world.

\*

# कायजोगीसु मिच्छादिट्टी ओघं ॥ ७८ ॥

सासणसम्मादिहिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं॥७९॥ सजोगिकेवली ओघं॥८०॥

काययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ।।७८॥

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछबस्य गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती काययोगी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ७९ ॥

काययोगी सयोगिकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक है ॥ ८० ॥

**#D78**. Surface distribution of those in State I and communicate through changes in the body form follows from the generalization for the State.

**#D79**. Surface distribution of the above in States II through XII follows from the generalization for the State.**#D80**. The same generalization holds for *sajogkevali*.

ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८१ ॥ सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि भागो ॥ ८२ ॥ सत्त चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८३ ॥

औदारिककाययोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान सर्व-होक है ॥ ८१ ॥

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ८२॥

उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह माग स्पर्श किये हैं ॥ ८३ ॥

**#D81**. Those in State I and communicate through gross changes in their body form are distributed on how much surface? According to the generalization for the State they are distributed in all the worlds.

**#D82**. Those in State II and communicate through gross changes in their body form are distributed on how much surface? According to the generalization for the State they are on a small fraction of their world, **#D83**. And on 7 of the 14 worlds.

सम्मामिच्छादिद्वीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ ८४ ॥

असंजदसम्मादिद्वीहि संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं पासिदं, होगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८५ ॥

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८६ ॥

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवळीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८७ ॥

औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्याद्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ८४ ॥ औदारिककाययोगी, असंयतसम्यग्द्रष्टि और संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ८५ ॥

औदारिककाययोगी उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती जीवोंने अतीत और अनागत-कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ८६ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती औदारिककाययोगी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श्व किया है ।। ८७ ॥

**#D84**. Those in State III and communicate through gross changes in their body form are distributed on how much surface? On a small fraction of their world. **#D85**. Those in States IV or V and communicate through gross changes in the body form are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D86**. and on 6 of the 14 worlds.

**#D87**. Those in States VI through XIII and communicate through gross changes in their body form are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

# ओरालियमिस्तकायजोगीसु मिच्छादिद्वी ओघं ॥ ८८ ॥

### सासणसम्माइहि असंजदसम्माइहि-सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८९ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ।। ८८ ॥

औदारिकामिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि, असंयतसम्यग्दष्टि और सयोगि-केवली जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श किया है ॥ ८९ ॥

**#D88**. Surface distribution of beings in State I who communicate through gross changes in their body form

combined with other modes follows from the generalization for the State.

**#D89**. Those in States II through IV and communicate through gross changes in the body forms combined with other modes of communication are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

\*

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छादिईाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्त असंखेज्जदिभागो ।। ९० ।।

अट्ठ तेरह चोइसभागा वा देसूणा ॥ ९१ ॥

सासणसम्मादिडी ओघं ॥ ९२ ॥

सम्मामिच्छादिही असंजदसम्मादिही ओघं ॥ ९३ ॥

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ९० ।।

वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह, और कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग स्पर्श किये है ॥ ९१ ॥

वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघस्पर्शनके समान हे॥ ९२॥

वैक्रिंयिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शन ओघके समान है ॥ ९३ ॥

**#D90**. Beings in State I who communicate through distorted body form are distributed on how much surface? On a fraction of their world.

**#D91**. And on 8 to 13 of the 14 worlds.

**#D92**. Surface distribution of such (D90) beings in State II follows from the generalization for the State (i.e. on a small fraction of their world).

**#D93**. Surface distribution of such beings in States III or IV follows from the generalization for the State (i.e. on a small fraction of their world).

# वेउन्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्टिंसासणसम्मादिट्टि-असं-जदसम्मादिर्ट्टाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ ९४ ॥

आहारकायजोगि·आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९५ ॥

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९४ ॥

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें प्रमत्तसंयतोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९५ ॥

**#D94**. Beings in States I, II or IV who communicate through distorted body form combined with other modes are distributed in how much space? On a small fraction of their world.

**#D95**. Beings in State VI who communicate through changes in the internal body form alone or combined with other modes are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

# कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्टी ओघं ॥ ९६ ॥

सासणसम्मादिडीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेजदि· भागो ॥ ९७ ॥ एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा ॥ ९८ ॥ असंजदसम्मादिईाहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखे-ज्जदिभागो॥ ९९॥

छ चोद्दसभागा देसुणा ॥ १०० ॥

सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जा भागा सञ्वलोगो वा ॥ १०१ ॥

कार्मणकाययोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा ओघके समान है॥ ९६॥

कार्मणकाययोगी सासादनतम्यग्दष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९७ ॥

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ९८ ॥

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ९९ ॥

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेक्षासे कुछ कम छद्द घटे चौदह भाग स्पर्श्व किये हैं ॥ १०० ॥

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यात बहुमाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ।। १०१ ।।

**#D96**. Surface distribution of those in State I who communicate through the transitional action form follows from the generalization for State I.

**#D97**. Such beings in State II are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D98**. And on 11 of the 14 worlds.

**#D99.** Such (D96) beings in State IV who communicate through the transitional action form are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,**#D100**. And on 6 of the 14 worlds.

**#D101**. Sajogkevali, who communicate through the transitional action form are distributed on a small fraction of their world, and all the worlds (?).

*In relation to the pain and pleasure response (D102-119)* 

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदएसु मिच्छादिद्वीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०२ ॥ अट्टचोदसभागा देसूणा, सब्वलोगो वा ॥ १०३ ॥

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्तीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १०२ ॥

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग तथा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १०३ ॥

**#D102**. Operationally, beings in State I with pain and pleasure response are distributed on how much surface? On a small part of their world,

**#D103**. And on 8 of the 14 worlds.

सासणसम्मादिईाहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज-दिभागो ॥ १०४ ॥

अट्ठ णव चोइसभागा देसूणा ॥ १०५॥

स्त्री और पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १०४ ॥

स्त्री और पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दष्टियोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह तथा नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।। १०५ ।।

**#D104**. Those in State II with pain and pleasure response are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D105**. And 8 or 9 of the 14 worlds.

# सम्मामिच्छादिट्टि-असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०६ ॥

#### अट्ट चोद्दसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ १०७ ॥

स्तविदी और पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि तथा असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १०६ ॥

उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।। १०७ ।।

**#D106**. Those in State IV with pain and pleasure response are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D107**. And on 8 of the 14 worlds.

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ १०८ ॥

#### छ चोद्दसभागा देसूणा ॥ १०९ ॥

स्तीवेदी और पुरुषवेदी संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १०८ ॥

स्तीवेदी और पुरुषवेदी संयतासंयत जीवोंने अतीत और अनागतकालकी विवक्षासे इछ कम छह बटे चाँदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १०९ ॥

**#D108**. Those in State V with pain and pleasure response are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D109**. And on 6 of the 14 worlds.

\*

### पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसामग-खवएहि केवाडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११०॥

स्तीवेदी और पुरुषवेदियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिशत्तिकरण उप-ज्ञामक और क्षपक गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श किया है ।। ११० ॥

**#D110**. Those in States VI through IX with pain and pleasure response are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

\*

# णउंसयवेदएसु मिच्छादिट्टी ओघं ॥ १११ ॥

नपुंसकवेदी जीवोंमें मिथ्याद्दष्टि जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान सर्वलोक दे ।। १११ ।।

**#D111**. Surface distribution of those in State I with ambivalence for pain and pleasure response follows from the generalization for the State (i.e. on all the worlds).

\*

## सासणसम्मादिडीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ ११२ ॥ बारह चोदसभागा वा देसूणा ॥ ११३ ॥

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ११२ ॥

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्ट्राष्टि जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम बारह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ११३ ॥

**#D112**. Those in State II with ambivalent pain and pleasure response are distributed on how much surface?

On a small fraction of their world,

on a small fraction of their world,

**#D113**. and on 12 of the 14 worlds.

\*

सम्मामिच्छादिईाहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखे-ज्जदिभागो ॥ ११४ ॥

असंजदसम्मादिट्टि संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११५ ॥

छ चोद्दसभागा देसूणा ॥ ११६ ॥

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि ति ओघं ॥ ११७ ॥

नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ११४ ॥

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दष्टि और संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ११५ ॥

उक्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ११६ ॥

उक्त नपुंसकवेदी जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिद्वत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओधके समान लोकका असंख्यातवां भाग दे ॥ ११७॥

**#D114**. Those in State III with ambivalence for pain and pleasure response are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

**#D115**. Those in State IV with ambivalence for pain and pleasure are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D116**. and on 6 of the 14 worlds.

**#D117**. Surface distribution of those in State VI through IX with ambivalence for pain and pleasure follow from the generalization for the States (i.e. on a small fraction of their world).

अपगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघं ॥ ११८ ॥ सजोगिकेवली ओघं ॥ ११९ ॥

अपगतवेदी जीवोंमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ११८ ॥ अपगतवेदी सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ११९ ॥

**#D118**. As a generalization, those in States X through XIV are beyond pain or pleasure response.

**#D119**. The same generalization holds for *sajogkevali*.

\*\*\*\*

In relation to the passions (D120-122)

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ १२०॥ णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयउवसमा खवा ओघं ॥१२१॥ अकसाईसु चदुट्टाणमोघं ॥ १२२॥

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोम-कषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२० ॥

विशेष बात यह है कि लोमकपायी जीवोंमें सक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवतीं उप• शमक और क्षपक जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ॥ १२१ ॥

अकषायी जीवोंमें उपशान्तकषाय आदि चार गुणस्थानवालोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२२ ॥

**#D120**. Operationally, surface distributions of those with the four kinds of passions follow from the generalization for the States I through IX.

**#D121**. In particular, subtle forms of greed also persist in State X.

**#D122**. Surface distribution of those without passions in States XI through XIV follows from the generalization for the State.

\*\*\*\*

In relation to the ability to discern (D123-131)

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि सुदअण्णाणीसु मिच्छादिद्वी ओघं ॥ १२३॥ सासणसम्मादिद्वी ओघं ॥ १२४ ॥

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२३ ॥

उक्त दोनों प्रकारके अज्ञानी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२४ ॥

**#D123**. Operationally, surface distribution of those in State I and lack innate ability to learn or cannot learn from what they hear follows from the generalization for the State.

**#D124**. Surface distribution of those in State II and lack innate ability to learn or cannot learn from what they hear) follows from the generalization for state II.

विभंगणाणीसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १२५ ॥

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सब्वलोगो वा ॥ १२६ ॥

सासणसम्मादिट्टी ओघं ॥ १२७ ॥ विभंगज्ञानियोंम्रें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १२५ ॥

विभंगज्ञानी जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा आठ वटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १२६ ॥

विभंगजानी सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२७॥

**#D125**. Those in State I with partial cognition are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D126**. And on 8 of the 14 worlds.

**#D127**. Surface distribution of those in State II with partial cognition follows from the generalization for state II.

\*

आभिणिवोहिय-सुद-ओधिणाणीसु असंजदसम्मादिडिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १२८ ॥

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-छदुमत्था त्ति ओघं ॥ १२९ ॥

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओघं ॥ १३० ॥

अजोगिकेवली ओघं ॥ १३१ ॥

आभिनिबोधिकज्ञानी, अतज्ञानी और अवधिज्ञानियोंमें असंयतसम्यग्दष्टि गुण-स्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछबस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२८ ॥

मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयतगुगस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछबस्थ गुण-स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२९॥

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है।। १३०॥

केवलज्ञानियोंमें अयोगिकेवली जिनोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १३१ ॥

**#D128**. Surface distribution of those in States IV through XIV with innate ability to learn and know limits from what they hear follows from the generalization for state IV.

**#D129**. Surface distribution of those with innate ability to know from expression and the context follows from the generalization for States VI through XII.

**#D130**. Surface distribution of those with valid and complete knowledge follows from the generalization for the *sajogkevali* state.

**#D131**. Surface distribution of those with valid and complete knowledge follows from the generalization for the *ajogkevali* state.

\*\*\*\*

#### In relation to the restraints (D132-139)

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओधं ॥ १३२ ॥

## सजोगिकेवली ओघं ॥ १३३ ॥

सामाइयच्छेदोवट्टावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि-यट्टि त्ति ओघं ॥ १३४ ॥

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अपमत्तसंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेजदिभागो ॥ १३५ ॥

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चटुट्टाणी ओधं ॥ १३७ ॥

संजदासंजदा ओघं ॥ १३८ ॥

असंजदेसु मिच्छादिट्रिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि ति ओघं ॥ १३९ ॥

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगि-केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है।।१३२।।

संयतोंमें सयोगिकेवलीका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १३३ ॥

सामायिक और छेदोपस्थापनाञ्चाद्विसंयतोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनि-इत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥१३४॥

सूक्ष्मसाम्परायिकञ्चद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसाम्परायिक उपञमक और क्षपक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १३६ ॥

यथाख्यातविहारविशुद्धिसंयतोंमें अन्तिम चार गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ।। १३७ ।।

संयतासंयत जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १३८ ॥

असंयत जीवोंमें मिथ्यादृष्टिगुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती असंयत जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १३९ ॥

**#D132**. Operationally, surface distribution of those with restraints follows from the generalization for the States VI through XIV.

**#D133**. The same holds for the *sajogkevali* state.

**#D134**. Surface distribution of those with restraints on time commitments for chores and obligations follows from the generalization the States VI through IX.

**#D135**. Those in State X with restraints on movement and activities are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

**#D136**. Surface distribution of those committed and dedicated to subtle restrains on all their activities, including thoughts and expressions, follows from the generalization for States X or XI.

**#D137**. Surface distribution of those with restraints on movements and obligations follows from the generalization for States XI through XIV.

**#D138**. Surface distribution of the occasionally restrained follows from the generalization for State V.

**#D139**. Surface distribution of the unrestrained (or indifferent to restraints) follows from the generalization for the State IV.

\*\*\*\*

*In relation to the ability to discern patterns (D140-145)* 

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेजविभागो ॥ १४०॥

अट्ठ चोदसभागा देसूणा सब्बलोगो वा ॥ १४१ ॥

सासणसम्मादिडिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ति ओधं॥ १४२॥

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-इंदुमत्था त्ति ओधं ॥ १४३ ॥

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो ॥ १४४ ॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १४५ ॥

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १४० ॥

चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदद्द भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ।। १४१ ।।

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछबस्थ गुणस्थान तक प्रलेक गुणस्थानवर्ती चक्षुदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १४२ ॥

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछग्रस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती अचक्षुदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है॥ १४३॥

अवधिदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ १४४ ॥ केवलदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र केवलज्ञानियोंके समान है ॥ १४५ ॥ **#D140**. Operationally, those in State I with eye vision are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D141**. And on 8 of the 14 worlds.

**#D142**. Surface distribution of those with limited ability to recognize patterns follows from the generalization for States II through XII.

**#D143**. Surface distribution of those with ability to recognize patterns without eye vision follows from the generalization for the States I through XII.

**#D144**. Surface distribution of those with ability to recognize limits in patterns follows from the generalizations for those with ability to recognize the limits and boundaries.

**#D145**. Surface distribution of those with valid perception follows from the generalization for those with valid and complete knowledge.

\*\*\*\*

#### In relation to the motives (D146-164)

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियमिच्छादिद्वी ओघं ॥ १४६ ॥

सासणसम्मादिईाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ १४७ ॥

पंच चत्तारि वे चोदसभागा वा देसूणा ॥ १४८ ॥

सम्मामिच्छादिट्टि-असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, होगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३९॥

लेक्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेक्या, नीललेक्या और कापोतलेक्यावाले मिथ्या-दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १४६ ॥ उक्त तीनों अशुमलेक्याओंवाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १४७ ॥

तीनों अग्रुभलेश्याओंवाले सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम पांच बटे चौदह, चार बटे चौदह और दो बटे चौदह माग स्पर्श किये हैं ॥ १४८ ॥

उक्त तीनों अधुभलेक्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श किया है ।। १४९ ॥

**#D146**. Operationally, surface distribution of those in State I with three dark (black, blue and gray) motives follows from the generalization for the State.

**#D147**. Those in State II with dark motives are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D148**. And on 5, 4 and 2 of the 14 worlds.

**#D149**. Those in State III or IV with dark motives are distributed on how much surface? On a small part of their world.

\*

तेउलेस्सिएसु मिच्छादिट्टि-सासणसम्मादिर्ट्वाहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५० ॥

अट्ठ णव चोइसभागा वा देखूणा ॥ १५१ ॥

सम्मामिच्छादिहि असंजदसम्मादिहीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५२ ॥

अट्ट चोइसभागा वा देसूणा ॥ १५३ ॥

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ १५३ ॥

दिवड्ट चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १५५ ॥

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा ओघं ॥ १५६ ॥

तेजोलेक्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्ध किया है ॥ १५० ॥

तेजोलेक्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह और कुछ कम नौ बटे चौदह भाग स्पर्श्व किये हैं ।। १५१ ।।

तेजोलेइयावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १५२ ॥

उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १५३ ॥

तेजोलेक्यावाले संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। १५४ ॥

तेजोलेक्यावाले संयतासंयत जीवोंने कुछ कम डेढ़ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १५५ ॥

तेजोलेक्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओषके समान है ॥ १५६ ॥

**#D150**. Those in States I or II with bright motives are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D151**. And on 8 (for State I) or 9 (for State II) of the 14 worlds.

**#D152**. Those in States III or IV with bright motives are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D153**. And on 8 of the 14 worlds.

**#D154**. Those in State V with bright motives are distributed on how much surface? On a small fraction of their world,

**#D155**. And on 1.5 of the 14 worlds.

**#D156**. Surface distribution of those in States VI or VII with bright motives follows from the generalization for the States.

\*

पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिद्विप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिईीहि केव-डियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेजदिभागो ॥ १५७ ॥

अड चोइसभागा वा देसूणा ॥ १५८ ॥

संजदासंजदेहि केवाडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि भागो ॥ १५९ ॥

```
पंच चोइसभागा वा देसूणा ॥ १६० ॥
```

#### पमत्त-अप्पमत्तसंजदा ओघं ॥ १६१ ॥

पद्मलेक्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। १५७ ।।

पद्मलेक्यावाले उक्त गुणस्थानवर्ती जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।। १५८ ॥

पद्मलेक्यावाले संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १५९ ॥

पबलेक्यावाले संयतासंयत जीवोंने अर्तात और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम पांच बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १६०॥

्षयलेक्यावाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है॥ १६१॥

**#D157**. Those in States I through IV with colored motives are distributed on how much surface? On a fraction of their world,

**#D158**. and on 8 of the 14 worlds.

**#D159**. Those in State V with colored motives are distributed on how much surface? On a fraction of their world,

**#D160**. and on 5 of the 14 worlds.

**#D161**. Surface distribution of those in States VI or VI with colored motives follows from the generalization for the States (i.e. a very small fraction of their world).

\*

# सुकलेस्सिएसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदेहि केवडियं स्वेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६२ ॥ छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १६३ ॥ पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १६४ ॥

शुङ्कलेक्यावालोंमें मिथ्याद्दष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्च किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्च किया है ॥ १६२ ॥

शुक्कलेक्यावाले उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १६३ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयो।गिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती ब्रुक्कलेब्यावाले जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ।। १६४ ।।

**#D162**. Those in States I through V with white motives are distributed on how much surface? On a small faction of their world,

**#D163**. and on 6 of the 14 worlds.

**#D164**. Surface distribution of those with white motives in States VI through XIV follows from the generalization for the state.

\*\*\*\*

In relation to the potential (D165-166)

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएम् मिच्छादिट्टिपहुडि जाव अजोगि-केवलि ति ओघं ॥ १६५ ॥

अभवसिद्धिएहिं केवडियं खेत्तं पोसिदं, सव्वलोगो ॥ १६६ ॥

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १६५ ॥

अमव्यसिद्धिक जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वलोक स्पर्श किया है॥ १६६ ॥

**#D165**. Operationally, surface distribution of those with realized potential follows from generalization for the state.

**#D166**. Those with unrealized potential are distributed on how much surface? All the 14 worlds.

\*\*\*\*\*

#### In relation to rationality (D167-176)

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्टीसु असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १६७॥

खइयसम्मादिट्टीसु असंजदसम्मादिट्टी ओघं ॥ १६८ ॥

संजदासंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, होगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६९ ॥

#### सजोगिकेवली ओघं ॥ १७० ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दष्टियोंमें असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १६७ ॥ क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १६८ ॥

क्षायिकसम्यग्दष्टियोंमें संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १६९ ॥

#### सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७० ॥

**#D167**. Surface distribution of those with some degree of rational consistency follows from the generalization for States IV through XIV.

**#D168**. Surface distribution of those in State IV with expressed rationality follows from the generalization for State IV ( i.e. virtually insignificant part of their world). **#D169**. Those in States V through XIV with expressed rationality are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

**#D170**. This generalization also holds for *sajogkevali*.

\*

वेदगसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिद्विष्पहुडि जाव अष्पमत्तसंजदा त्ति ओघं ॥ १७१ ॥

वेदकसम्यग्दष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७१ ॥

**#D171**. Surface distribution of those with dormant consistency follows from the generalization for the States IV through VII.

# उवसमसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिद्वी ओघं ॥ १७२ ॥

\*

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७३ ॥ सासणसम्मादिही ओघं ॥ १७४ ॥ सम्मामिच्छादिही ओघं ॥ १७५ ॥ मिच्छादिही ओघं ॥ १७५ ॥

औपश्रमिकसम्यग्दष्टियोंमें असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है॥ १७२॥

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषायवीतरागछबस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १७३ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७४ ॥ सम्यग्मिथ्याद्दष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७५ ॥ मिथ्याद्दष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७६ ॥

**#D172**. Surface distribution of those in State IV with chaotic consistency follows from the generalization for the state.

**#D173**. Those in State V through XII with chaotic consistency are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

**#D174**. Surface distribution of those in State II with disability for consistency follows from the generalization for State II.

**#D175**. Surface distribution of those unable to discern need for consistency follows from the generalization for State III.

**#D176**. Surface distribution of irrational beings follows from the generalization for the State I.

\*\*\*\*

In relation to sensibility (D177-180)

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स अंसंखेज्जदिभागो ॥ १७७ ॥ अट्ठ चोदसभागा देसूणा, सञ्वलेगो वा ॥ १७८ ॥ सासणसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ १७९ ॥ असण्णीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, सब्वलोगो ॥ १८० ॥

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श्व किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १७७ ॥

संज्ञी जीवोंने अतीत और वर्तमानकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १७८ ॥

संज्ञी जीवोंमें सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछबस्थ गुण-स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७९ ॥ असंज्ञी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥१८०॥

**#D177**. Those in State I with sensibility are distributed on how much surface? On a very small fraction of their world,

**#D178**. and on 8 of the 14 worlds (and all the worlds?).

**#D179**. Surface distribution of those in States II through XII with sensibility follows from the generalization for the state.

**#D180**. Those without sensibility are distributed on how much surface? All the worlds.

\*\*\*\*

In relation to the ability to internalize (D181-185) आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १८१ ॥ सासणसम्मादिडिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं ॥ १८२ ॥ पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवळीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८३ ॥

#### अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ १८४ ॥

णवरिविसेसा, अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८५ ॥

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान हे ॥ १८१ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती आहारक जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १८२ ॥

आहारक जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां माग स्पर्श किया है ॥ १८३ ॥

अनाहारक जीवोंमें संभवित गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्श्वनक्षेत्र कार्मणकाय-योगियोंके क्षेत्रके समान है ।। १८४ ॥

विशेष बात यह है कि अयोगिकेवालियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है १ लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। १८५ ॥

**#D181**. Operationally, surface distribution of those in State I with ability to internalize follows from the generalization for State I.

**#D182**. Surface distribution of those in States II through V with ability to internalize follows from the generalization for the State.

**#D183**. Those in States VI through XIII with ability to internalize are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

**#D184**. Surface occupied by those who do not internalize follows from the section on communication through the transitional action form.

**#D185**. In particular, the *ajogkevali* (who do not internalize) are distributed on how much surface? On a small fraction of their world.

\*\*\*\*